subjected to screening by a Committee set-up for the purpose. Since such cases are only in initial stages, the figures of investment, can not be predicted.

The quantum of foreign assistance expected during the Plan period is given below:

(Rs. crores)

Company	Foreign assistance
CIL . . .	460 through Budget + 342 direct assistance
SCCL . . .	440
NLC . . .	86

(e) Yes, Sir.

(f) Demnd projection for current year and after three years i.e. terminal year of 8th Plan is given below:

Year	Demand in MT
1993-94 . .	268.80*
1996-97 . .	311.00**

*The above demand estimate includes import of 6 m.t. of coking coal for use in steel plants.

**Demand estimate includes 6.09 m.t. of import of coking coal for use in steel plants.

Mining projects of Central Coalfields Ltd.

3546. SHRI SURESH KALMADI: Will the Minister of COAL be pleased to state:

(a) what is the number of mining projects completed by the Central Coalfields Ltd. a subsidiary of Coal India Ltd., since nationalisation of the Coal Industry;

(b) whether there are any mining projects in hand which the company proposes to complete; and

(c) what is the present built up Coal production capacity of the company?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF COAL (SHRI AJIT KUMAR PANJA): (a) Since nationalisation of the Coal Industry, 48 mining projects, each costing Rs. 2 crores and above, have been completed in the Central Coalfields Ltd. (CCL).

(b) Presently 20 mining projects are under different stages of implementation.

(c) The present built-up production capacity in CCL is about 35 million tonnes per annum.

कोयला खानों में पड़ा हुआ बिना बिका कोयला

3547. श्री राम जेठमलानी :

डा० जितेन्द्र कुमार जैन :

क्या कोयला मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि पिछले कुछ वर्षों से देश में कोयले का उत्पादन लगातार बढ़ रहा है ;

(ख) यदि हां, तो क्या यह भी सच है कि अधिकांश उत्पादित कोयला घटिया किस्म का है; जिसका कोई खरीददार नहीं है ;

(ग) यदि नहीं, तो क्या खानों के मुहानों पर लगभग 510 लाख टन बिना बिका कोयला पड़ा हुआ है :

(घ) जून, 1993 तक खानों के मुहानों पर पड़े बिना बिके कोयले की कुल मात्रा कितनी थी और प्राथमिकता के आधार पर इसकी कब तक बिक्री कर दी जायेगी और इसका संभावित विक्रय मूल्य कितना होगा तथा इससे कितनी आमदनी होगी ;

(ङ) कोल इंडिया लिमिटेड और इसकी सहायक कम्पनियों के स्वामित्व वाले ऐसे संयंत्रों का मूल्य कितना रहा है ;

(च) ऐसे संयंत्र कितने हैं जिनका उपयोग नहीं किया जा रहा था तथा उनकी लागत कितनी है ;

(छ) इन संयंत्रों को पूरे वर्ष उपयोग में न लाये जाने के क्या कारण हैं; और

(ज) इन संयंत्रों के उपयोग में रुकावट आने के कारण वार्षिक कोयला उत्पादन में अनुमानतः कितनी गिरावट आएगी ?

कोयला मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री अजित कुमार पांजा) : (क) जी, हां । पिछले तीन वर्षों के दौरान देश में हुआ कोयले का उत्पादन नीचे दिया गया है :–

(आंकड़े अनंतिम)

वर्ष	(मिलियन टन में)
1990–91	211.73
1991–92	229.28
1992–93	238.23

(ख) जी, नहीं ।

(ग) और (घ) 30–6–93 को कोल इंडिया लि० और सिंगरेनी कोलियरीज कंपनी लि० में कोयले का स्टाक 42.40 मिलियन टन (अनंतिम) था। कोयला के स्टाक के संचय के मुख्य कारण निम्न लिखित हैं :–

(1) विपरीत मौसम, अत्यधिक अनुपस्थिति आदि के दौरान महत्वपूर्ण उपभोक्ताओं को कोयले की आपूर्ति बाधित न होने देने के विचार से कोयला कंपनियों द्वारा कोयला के स्टाक को एक न्यूनतम स्तर पर बनाए रखना होता है।

(2) कुछ कोयला उत्पादन क्षेत्रों में उत्पादन एवं परिवहन क्षमताओं के बीच तालमेल नहीं है।

(3) अधिक मांग प्रदर्शित करने/ कोयला न उठाने की प्रवृत्ति उपभोक्ताओं में पाई जाती है, जिससे उनका आरंभिक प्रक्षेप विशेषकर विद्युत ग्रेड के कोयले के स्टाक में वृद्धि करने में सहायक होता है। कोयला कंपनियों विशेषकर कोल इंडिया लि० ने पिट-हैड स्टाक के अपसरण की योजना बनाई है।

उपभोक्ताओं को आगे से कोयले की उपलब्धता बढ़ाने के लिए कोल इंडिया लिमिटेड ने उदारीकृत बिक्री योजना को नवीन रूप दिया है । कोयले के थोक व्यापारियों और छोटे व्यापारियों की नियुक्ति के लिए भी कदम उठाए गए हैं ; जो कि बिना किसी रुकावट के कोयले की बिक्री कर सकें । स्टाक के अपसरण में वास्तव में कितना समय लगेगा, यह मांग और इन योजनाओं के प्रति उपभोक्ताओं की प्रतिक्रिया पर निर्भर करेगा । इस कोयले का विक्रय मूल्य वर्तमान मूल्य होगा जो कि सरकार द्वारा समय-समय पर संशोधित किया जाता है।

(ङ) से (छ) संभवतः माननीय सदस्य का आशय कोल इंडिया लि. की सहायक कंपनियों के अधीन कोयला रखरखाव संयंत्रों की ओर है । कोल इंडिया लि. की विभिन्न सहायक कंपनियों में 1–4–93 को 159.4 मि.टन क्षमता के 198 कोयला रखरखाव संयंत्र अस्तित्व में हैं । इनके अतिरिक्त 19 मि. टन कोयले के संचालन की सुविधा वाली 15 कोयला वाशरियां

जो कि कोककर कोयले को साफ करने के लिए हैं :ा. अभी, भा. को. का. लि. के अंतर्गत 3 कोयला रखरखाव संयंत्रों को छोडकर, शेष सभी कोयला रखरखाव संयंत्र कार्यरत हैं । इन तीन कोयला रखरखाव संयंत्रों की कुल लागत 281.54 लाख रुपए की है । इन संयंत्रों के कार्यरत न होने के निम्नलिखित कारण हैं :—

संयंत्र	क्षमता मि.ट. में	स्थापना लागत (लाख रु० में)	कारण
कतरी	0.36	93.90	वर्तमान प्रेषण कार्यक्रम ढके हुये वैगनों के लदान की अपेक्षा करता है, अतः संयंत्रों का उपयोग नहीं किया जा सकता । जब विद्यमान स्रोतों से अधिक क्षमता के पावर रैकों की मांग होती है, कोयला रखरखाव संयंत्र का कार्यचालन पुनः आरम्भ कर दिया जायेगा ।
निचीतपुर	0.45	101.61	संबंधित खान समाप्त हो गई है, संपूर्ण संयंत्र को सुदागडीह रिजर्व इन्क्लाइन में स्थानांतरिक किया जा रहा है ।
केसलपुर	0.50	86.00	वर्तमान प्रेषण कार्यक्रम में ढके हुये वैगनों का लदान अपेक्षित है, यदि पावर रैकों की मांग बढ़ेगी, कोयला रखरखाव संयंत्र के चालू करने पर विचार किया जायेगा ।

(ज) इन तीन कोयला संयंत्रों का उपयोग न रखरखाव के होने कोयले के उत्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पडेगा ।

Expansion of coal minig projects

3548. SHRI VIREN J. SHAH: Will the Minister of COAL be pleased to state:

(a) what are the details of the new expansion reorganisation of coal mining projects which have been identified for development during the Eighth Five Year Plan period, 1992-93 to 1996-97 and during the Ninth Five Year Plan period.

(b) what will be the proposed investment required for the development of these projects and how the funds are likely to be made available;

(c) Whether the assistance of the World Bank has been sought in this regard; and

(d) if so, what are the details thereof?